हिंदी–छत्तीसगढ़ी एवं संस्कृत

कक्षा – 5

सत्र 2024–25

DIKSHA एप कैसे डाउनलोड करें?

विकल्प 1 : अपने मोबाइल ब्राउज़र पर diksha.gov.in/app टाइप करें।
विकल्प 2 : Google Play Store में DIKSHA NCTE ढूंढ़े एवं डाउनलोड बटन पर tap करें।

मोबाइल पर QR कोड का उपयोग कर डिजिटल विषय वस्तु कैसे प्राप्त करें ?

DIKSHA App को लॉच करे → **App** की समस्त अनुमति को स्वीकार करें → उपयोगकर्ता **Profile** का चयन करें।

1 पाठ्यपुस्तक में QR Code को Scan करने के लिए मोबाइल में QR Code tap करें।

2 मोबाईल को QR Code पर केन्द्रित करें।

3 सफल Scan के पश्चात् QR Code से लिंक की गई सूची उपलब्ध होगी।

डेस्कटॉप पर QR Code का उपयोग कर डिजिटल विषय–वस्तु तक कैसे पहुँचे ?

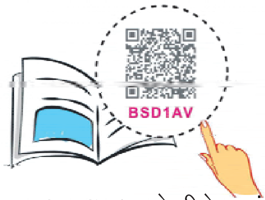

1 QR Code के नीचे 6 अंक का Alpha Numeric Code दिया गया है।

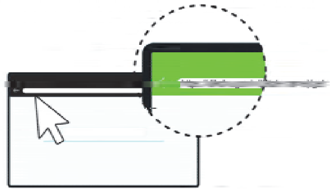

2 ब्राउज़र में diksha. gov.in/cg टाईप करें।

3 सर्च बार पर 6 डिजिट का QR CODE टाईप करें।

4 प्राप्त विषय–वस्तु की सूची से चाही गई विषय–वस्तु पर क्लिक करें।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

निःशुल्क वितरण हेतु

© राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

5Q76YX

प्रकाशन वर्ष 2024

मार्गदर्शन

डॉ. हृदयकांत दीवान, विद्या भवन, उदयपुर

संयोजक

डॉ. विद्यावती चन्द्राकर

मुख्य समन्वयक

श्री आर. के. वर्मा

विषय समन्वयक

बी. आर. साहू, विद्या डांगे

हिंदी	छत्तीसगढ़ी	संस्कृत
डॉ. सी.एल.मिश्र, बी. आर. साहू, दिनेश गौतम, विनय शरण सिंह, गजानन्द प्रसाद देवांगन, शोभा शंकर नागदा, श्रीमती प्रीति भटनागर	डॉ. परदेशी राम वर्मा, डॉ. चितरंजनकर, एम.एस. वर्मा, दिनेश गौतम, भूषण लाल परगनिहा, राम कुमार वर्मा, रमेश यादव, शिव कुमार अंगारे, योगेन्द्र बेलचंदन	**विशेष सहयोग** डॉ. सुरेश शर्मा, बी.पी. तिवारी, (समन्वयक) डॉ. कल्पना द्विवेदी, ललित कुमार शर्मा, डॉ. संध्यारानी शुक्ला, डॉ. राजकुमार तिवारी

चित्रांकन

समीर श्रीवास्तव, प्रशांत सोनी, अजय सक्सेना, भूपेन सैकिया, हेमंत दास

आवरण पृष्ठ एवं ले–आऊट

रेखराज चौरागड़े

प्रकाशक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

मुद्रक

छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर (छ.ग.)

मुद्रणालय

मुद्रित पुस्तकों की संख्या – ....

प्राक्कथन

6 से 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा के संवैधानिक प्रतिबद्धता को पूरा करने के लिए यह भी नितांत आवश्यक है कि उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान की जाए। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रदेश के शिक्षा विभाग एवं सर्व शिक्षा अभियान द्वारा सतत् प्रयास किए जा रहे हैं। इसी संदर्भ में राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक कक्षाओं के लिए नवीन पाठ्यक्रम की रचना कर समय की आवश्यकताओं, चुनौतियों और समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए पाठ्यपुस्तकों की रचनाएँ की गई हैं। कक्षा 5 के लिए रचित यह पुस्तक निरंतर दो वर्षों तक राज्य के चयनित विद्यालयों में प्रयोग के तौर पर पढ़ाई गई। अब यह राज्य के सभी प्राथमिक विद्यालयों में लागू की जा रही है। इन दो वर्षों में विद्यालयों में शिक्षकों/विद्यार्थियों से अध्ययन के समय जो प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुई थी, उन सब पर विचार करके पुस्तक की पाठ्यसामग्री को अंतिम रूप दिया गया है। फिर भी जब–जब हमें शिक्षाशास्त्रियों, विषय–विशेषज्ञों, शिक्षकों एवं पालकों के उपयोगी सुझाव प्राप्त होंगे, हम उन पर विचार करके पुस्तक में संशोधन करेंगे।

कक्षा 5 के विद्यार्थी अपने आस–पास के जीवन के बारे में सोचना –समझना प्रारंभ कर देते हैं। इस समझ को और अधिक विकसित करने के लिए यह आवश्यक है कि उन्हें उचित शब्दावली, वाक्य संरचना, व्याकरणगत नियमों का ज्ञान कराया जाए। भाषा शिक्षण का एक प्रमुख उद्देश्य यह भी है कि विद्यार्थी के सोचने, समझने के तरीकों को विकसित किया जाए। इसके लिए यह आवश्यक है कि विद्यार्थी पुस्तक के साथ अपना सतर्क पाठक का संबंध जोड़े। इसके लिए वह सामग्री पर आधारित नए प्रश्न गढ़े, पाठ्यसामग्री में प्रस्तुत विचारों पर टिप्पणी करे। इस पुस्तक में इसकी अपार संभावनाएँ हैं।

इस पुस्तक की रचना में आधारभूत प्रयत्न यह रहा है–

1. पुस्तक की विषयवस्तु बच्चों के स्तर के अनुरूप हो, साथ ही उनकी अपेक्षित दक्षताओं तथा कौशलों के विकास में सहायक सिद्ध हो।
2. विषयवस्तु की प्रस्तुति बच्चों के लिए आकर्षक, रुचिकर और सुगम हो।

3. विषयवस्तु के अध्ययन से बच्चों में स्वस्थ प्रवृत्तियों, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और शाश्वत मानवीय मूल्यों का विकास हो सके।

4. हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विविधता और विरासत के प्रति बच्चों में बेहतर समझ बने और वे इस पर गर्व कर सकें।

इस पुस्तक को तैयार करने के लिए निरंतर श्रृंखलाबद्ध कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता रहा जिसमें राज्य के तथा बाहर के शिक्षकों, विद्यार्थियों, विषय विशेषज्ञों का बहुमूल्य श्रम और सहयोग हमें मिलता रहा। पाठों के संकलन के लिए अनेक राज्यों की पाठ्यपुस्तकों, अनेक प्रकाशकों की उत्कृष्ट उपयोगी पुस्तकों की पाठ्यसामग्री को आधार रूप में रखा गया। इसके अतिरिक्त राज्य के साहित्यकारों की रचनाएँ भी इस पुस्तक में संकलित की गई।

स्कूल शिक्षा विभाग एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छ.ग. द्वारा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में दक्षता संवर्धन हेतु अतिरिक्त पाठ्य संसाधन उपलब्ध कराने की दृष्टि से **Energized Text Books** एक अभिनव प्रयास है, जिसे ऑन लाईन एवं ऑफ लाईन (डाउनलोड करने के उपरांत) उपयोग किया जा सकता है। **ETBs** का प्रमुख उद्देश्य पाठ्यवस्तु के अतिरिक्त ऑडियो–वीडियो, एनीमेशन फॉरमेट में अधिगम सामग्री, संबंधित अभ्यास, प्रश्न एवं शिक्षकों के लिए संदर्भ सामग्री प्रदान करना है।

इस पुस्तक को अंतिम स्वरूप प्रदान करने में हमें जिन शिक्षकों, शिक्षाविदों का सहयोग प्राप्त हुआ है, उन सबके प्रति हम आभार प्रदर्शित करते हैं। इस कार्य में हमें विद्या भवन उदयपुर का भरपूर सहयोग भी प्राप्त हुआ है, इसके लिए हम उनके आभारी हैं। हम उन सभी कवियों,लेखकों तथा उनके उत्तराधिकारियों का भी हृदय से आभार व्यक्त करते हैं जिनकी रचनाएँ इस पुस्तक में समाहित की गई हैं।

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

शिक्षकों के लिए

कक्षा पाँचवीं के लिए भाषा संबंधी पुस्तक 'भारती' का यह संस्करण आपके हाथ में है। हम चाहेंगे कि इस संस्करण का आप भली–भाँति अध्ययन करें और इसे और अधिक उपयोगी बनाने के लिए अपने मूल्यवान विचार/सुझाव हमें भेजें जिससे यह पुस्तक अपना विशेष स्थान बना सके। पुस्तक की रचना करते समय हमने जिन बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित किया है, वे निम्नलिखित हैं–

1. हमारी मान्यता है कि कक्षा चार तक विद्यार्थियों ने संयुक्ताक्षर, संयुक्त व्यंजनों के अतिरिक्त व्याकरण में संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण की प्रारंभिक जानकारी अर्जित कर ली है। कक्षा पाँचवीं की इस पुस्तक में हमने वाक्य संरचना,विराम चिह्न, उपसर्ग, प्रत्यय, तद्भव, तत्सम, समानोच्चारित, पर्यायवाची शब्दों की जानकारी पर अधिक बल दिया है। यद्यपि इनकी थोड़ी–थोड़ी जानकारी कक्षा चार की पुस्तक में भी दी गई है। इस पुस्तक में व्याकरण के इन अंगों को थोड़ा विस्तार से बताया गया है। व्याकरण के सभी अंगों की जानकारी देने में हमारा यह उद्देश्य रहा है कि पहले कुछ उदाहरण दिए जाएँ, फिर उनको स्पष्ट किया जाए और फिर परिभाषा दी जाए। इससे व्याकरण के अध्ययन–अध्यापन में आने वाली शुष्कता दूर होगी।
2. प्रायः यह देखा गया है कि शिक्षक पाठ पढ़ाने के पूर्व पृष्ठभूमि का निर्माण नहीं करते। वे सीधे–सीधे बच्चों से पुस्तक पढ़वाना प्रारंभ कर देते हैं। हमने पूर्व की कक्षाओं की भाँति इस पुस्तक में भी पाठ पढ़ाने से पहले पृष्ठभूमि निर्माण करने पर बल दिया है। मनोवैज्ञानिक रूप से यह प्रक्रिया अधिक उचित है। इस प्रक्रिया से जहाँ बच्चों के पूर्व ज्ञान का पता चल जाता है, वहीं पाठ को समझने में भी उन्हें सहायता मिलती है। इस विधि को आप और आगे बढ़ा सकते हैं। पाठ पढ़ना प्रारंभ करने के पूर्व विद्यार्थियों से ऐसे प्रश्न भी किए जाएँ जिनके उत्तर वे अपने पूर्व अनुभवों से प्रकट कर सकें। इस विधि से पाठ के अध्ययन में विद्यार्थियों की सहभागिता भी ली जा सकेगी।
3. साहित्य की विविध विधाओं के अध्ययन में भिन्नता होती है। कविता का पाठ पढ़ाने की विधि, विवरण या निबंध की विधि से भिन्न है। इसी प्रकार एकांकी अध्ययन की विधि कहानी के अध्ययन की विधि से भिन्न है। कविता पढ़ाने का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को सौंदर्य बोध, रसास्वादन एवं भाव बोध कराना है। कविता को पढ़कर विद्यार्थी आनंद का अनुभव करें। कविता को हाव–भाव एवं स्वर के उतार–चढ़ाव के साथ पढ़ सकें। इसके लिए पहले आपको, कविता को इसी रूप में प्रस्तुत करना होगा तभी विद्यार्थी सफलतापूर्वक अनुकरण वाचन कर सकेंगे। हर कविता का राग, रस और भाव के अनुरूप अलग–अलग होगा। कविता के पाठों में विद्यार्थियों के वाचन के लिए कुछ अतिरिक्त सामग्रियाँ भी हैं। आप भी कुछ अन्य सामग्री बाल पत्रिकाओं से दे सकते हैं। इस प्रकार विद्यार्थियों में कविता के प्रति रुचि जागृत की जा सकती है। आप कक्षा में अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता आयोजित कर सकते हैं। इस प्रतियोगिता में अन्य कवियों की रचनाओं का गायन कराया जा सकता है।
4. कविता के अध्ययन में आनंद प्राप्त करने के साथ–साथ प्रकृति तथा पशु–पक्षियों के प्रति अनुराग का भाव विकसित करना भी हमारा उद्देश्य है । कविता का अध्यापन करने में पहले आप उचित स्वर, हाव–भाव के साथ पूरी कविता एक बार पढ़ें फिर

एक–एक छंद को सुनाएँ जिससे विद्यार्थी कविता के अर्थ/भाव को समझते हुए उसका आनंद उठा सकें। विद्यार्थियों से भी कविता पाठ कराएँ, छोटे–छोटे प्रश्न कर उत्तर प्राप्त करें।

5. कविता अध्यापन में जिस प्रकार पृष्ठभूमि का निर्माण किया गया था; उसी प्रकार की पृष्ठभूमि का निर्माण कहानी, विवरण, निबंध आदि के अध्यापन के समय करें। यहाँ भी प्रश्नोत्तर के माध्यम से विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान की जानकारी ली जा सकती है और पृष्ठभूमि तैयार की जा सकती है।

6. लिखित प्रश्न–अभ्यास के पूर्व इस पुस्तक में एक गतिविधि मौखिक प्रश्न–उत्तर की भी कराई गई है। इस गतिविधि में कक्षा को दो समूहों में विभाजित किया जाता है। एक समूह के विद्यार्थी पाठ के आधार पर प्रश्न बनाकर पूछेंगे, दूसरे समूह के विद्यार्थी उस प्रश्न का उत्तर देगें। यदि कोई समूह सही उत्तर न दे पाए तो प्रश्न पूछनेवाला उसका उत्तर देगा। यही प्रक्रिया दूसरे समूह के विद्यार्थी भी करेंगे। इससे जहाँ विद्यार्थियों में विषयवस्तु की समझ विकसित होगी, वहीं वे प्रश्न बनाना भी सीखेंगे। इस गतिविधि में ध्यान रखने की बात यह है कि पाठ में दिए गए प्रश्न न पूछे जाएँ। आप विद्यार्थियों को नए–नए प्रश्न बनाने के तरीके समझाएँ। पाठ्यवस्तु पर आधारित प्रश्नों के अतिरिक्त विषय के संबंधित कुछ ऐसे प्रश्न आप भी पूछें। उत्तर बताने के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करें।

7. प्रत्येक कक्षा में विद्यार्थियों को कुछ नवीन शब्दों का ज्ञान कराना आवश्यक है। पाठ्यक्रम में भी इनका उल्लेख है। अनुमान है कि प्रत्येक कक्षा में लगभग पाँच सौ नए शब्दों की जानकारी विद्यार्थियों को हो। इस प्रकार कक्षा पाँचवीं तक आते–आते बच्चों को दैनिक व्यवहार में आनेवाले शब्दों के साथ–साथ लगभग पाँच हजार शब्दों का ज्ञान होना चाहिए। शब्दों के ज्ञान से अर्थ है कि विद्यार्थी उनका अर्थ समझें, वाक्यों में प्रयोग कर सकें, सही उच्चारण कर सकें और उन्हें शुद्ध रूप में लिख सकें। ऐसे शब्दों को अच्छी तरह पहचानने के लिए यह आवश्यक है कि विद्यार्थी उसे बार–बार पढ़ें। अतः ऐसे वाक्यों/शब्दों का बार–बार प्रयोग किया ही जाना चाहिए। इसके लिए यह भी आवश्यक है कि आप उसे श्यामपट पर लिखें और श्रुतिलेख में लिखवाएँ। इस पुस्तक में ऐसे वाक्यों के लिए भी गतिविधि दी गई है। कक्षा के समूह में से कोई एक विद्यार्थी दूसरे समूह के विद्यार्थी से उस नए वाक्य का अर्थ पूछे और उसका वाक्य प्रयोग करके बताए। यदि विद्यार्थी अलग–अलग वाक्यों में उस शब्द का ठीक–ठीक अर्थ में प्रयोग कर सकेगा तो यह माना जाएगा कि वह उस शब्द को जानता है।

8. वर्तनीगत शुद्धियों के लिए श्रुतिलेख करवाने पर बल दिया गया है। विद्यार्थियों से श्रुतिलेख कराएँ, बाद में शिक्षक कठिन वर्तनीवाले शब्दों को श्यामपट पर लिख दें। विद्यार्थी अपनी उत्तरपुस्तिकाओं को अदल–बदलकर परीक्षण करें। विद्यार्थियों की वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ सुधारने के लिए यह एक कारगर उपाय होगा।

9. पाठ्यपुस्तकों के अध्यापन में वाचन का महत्वपूर्ण स्थान है। वाचन के अंतर्गत शिक्षक द्वारा आदर्श वाचन तथा बच्चों द्वारा सस्वर अनुकरण वाचन एवं मौन वाचन आता है। इसके लिए यह आवश्यक है कि पहले आप एक अनुच्छेद का आदर्श वाचन करें। तब विद्यार्थियों से अनुकरण वाचन कराएँ। इससे बच्चों का उच्चारण स्पष्ट होगा। उन्हें उचित विराम चिह्नों को ध्यान में रखकर पढ़ने के लिए प्रोत्साहन भी मिलेगा। यहाँ

यह ध्यान रखना जरूरी है कि विद्यार्थी यांत्रिक ढंग से किसी पाठ का वाचन न करें। यह भी किया जा सकता है कि जब कोई अनुच्छेद एक विद्यार्थी पढ़े तो अनुच्छेद समाप्त होने पर उस अनुच्छेद पर विद्यार्थी से प्रश्न पूछ लिए जाएँ। इस प्रकार समझकर पढ़ने पर बल दें।

10. आप इस बात का अवश्य ध्यान रखें कि विभिन्न गतिविधियों, वाचन आदि में प्रत्येक विद्यार्थी की सहभागिता अवश्य ली जाए। मौन वाचन का अपना अलग महत्व है। कभी–कभी आप कक्षा में मौखिक प्रश्न पूछते हैं। उसका उत्तर खोजने के लिए विद्यार्थी पाठ के उस अंश को मन–ही–मन पढ़ते हैं। विद्यार्थियों को मौन वाचन के अवसर अवश्य दिए जाएँ।

11. इस पुस्तक में हमारा यह भी प्रयास रहा है कि भाषा की पुस्तक से अन्य विषयों का भी सह–संबंध हो। उसके लिए इस पुस्तक में विज्ञान संबंधी निबंध हैं (रोबोट), इतिहास संबंधी पाठ (महापुरुषों का बचपन–प्रेरक प्रसंग), भूगोल संबंधी पाठ (रेशम, चंदन और सोने की धरती– कर्नाटक) घी, गुड़ देने वाला वृक्ष, प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में आदिवासियों की सहभागिता (गुंडाधूर), नीति संबंधी पाठ (वृंद के दोहे), समय का महत्व आदि पाठ तो हैं ही, इनके अतिरिक्त कुछ ऐसे पाठ भी हैं जिन्हें पढ़कर विद्यार्थियों को अपने भावी जीवन के संबंध में कुछ संदेश मिलेंगे, वहीं उन्हें अपने राज्य की विशेषताओं को जानने के अवसर भी मिलेंगे।

12. पाठ पर आधारित प्रश्नों को चार वर्गों में विभाजित किया गया है। पहले प्रकार के प्रश्न विषयवस्तु पर आधारित हैं। ऐसे प्रश्न कई रूपों में पूछे गए हैं। कुछ केवल जानकारी से संबंधित हैं, कुछ प्रयोगात्मक हैं, कुछ प्रश्न सोच–समझकर उत्तर देने वाले हैं। दूसरे प्रकार के प्रश्न भाषा एवं व्याकरण से संबंधित हैं। तीसरे प्रकार के प्रश्न रचना के हैं। अंत में योग्यता विस्तार के लिए प्रत्येक पाठ में कुछ सुझाव दिए गए हैं। कुछ गतिविधि या क्रियाकलाप संबंधी भी प्रश्न हैं। चित्रों, नीति वाक्यों को संग्रह करना, इनसे कक्षा तथा विद्यालय भवन को सजाना, एक कविता पढ़कर उसी भाव की अन्य कविता खोजकर पढ़ना और बालसभा में सुनाना, कविता की दो पंक्तियाँ देकर दो अन्य पंक्तियाँ गढ़ना, अधूरी कहानी को पूरी करना, चित्र देखकर कहानी लिखना, वर्ग पहेलियों को बूझना आदि क्रियाएँ सम्मिलित की गई हैं। अतिरिक्त पठन के लिए भी कुछ पाठों के साथ कुछ अनुच्छेद, काव्य पंक्तियाँ दी गई हैं। विद्यार्थी इन्हें पढ़कर कुछ प्रेरणा ग्रहण करेंगे, वाचन की उनकी क्षमता में विकास होगा।

13. हमने इस पुस्तक को सभी श्रेणी के विद्यार्थियों के स्तर के अनुरूप श्रेष्ठ बनाने का प्रयास किया है। आपके बहुमूल्य सुझाव मिलेंगे तो पुस्तक के स्वरूप में कुछ और सुधार आएगा। हमें विश्वास है कि आप सुझावों के अनुरूप शिक्षण करेंगे तो विद्यार्थियों के स्तर में अवश्य सुधार होगा। आपसे यह भी आग्रह है कि आप पुस्तक का समुचित अध्ययन करें, अपने संपर्क में आनेवाले विद्वानों से इस पुस्तक पर चर्चा करें और सुझाव लें। आशा है, आपके बहुमूल्य सुझाव हमें अवश्य मिलेंगे।

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	पाठ	विधा	रचयिता	पृष्ठ
	हिंदी			
1.	मैं अमर शहीदों का चारण	(कविता)	श्रीकृष्ण 'सरल'	01–04
2.	घी, गुड़ और शहद देनेवाला वृक्ष	(निबंध)	संकलित	05–10
3.	सोन के फर	(कहानी)	लेखक मंडल	11–15
4.	मैं सड़क हूँ	(निबंध)	संकलित	16–21
5.	रोबोट	(निबंध)	लेखक मंडल	22–27
6.	चित्रकार मोर	(कहानी)	संकलित	28–32
7.	क्यूँ–क्यूँ छोरी	(चरित्र)	महाश्वेता देवी	33–39
8.	स्वामी आत्मानंद	(जीवनी)	लेखक मंडल	40–43
9.	श्रम के आरती	(कविता)	भगवती लाल सेन	44–47
10.	सुनिता की पहिया कुर्सी	(कहानी)	रिमझिम से	48–53
11.	महामानव	(कहानी)	अनवार आलम	54–58
12.	गुंडाधूर	(जीवन–चरित)	लेखक मंडल	59–65
13.	जंगल के राम कहानी	(कविता)	लेखक मंडल	66–68
14.	रेशम, चंदन और सोने की धरती – कर्नाटक	(निबंध)	लेखकमंडल	69–74
15.	एक और गुरु दक्षिणा	(कहानी)	राजे राघव	75–81
16.	पत्र	(पत्र)	लेखक मंडल	82–87
17.	जीवन के दोहा	(दोहे)	ठाकुर जीवन सिंह	88–90
18.	हार नहीं होती	(कविता)	सोहन लाल द्विवेदी	91–94
19.	राष्ट्र–प्रहरी	(निबंध)	संकलित	95–99
20.	मस्जिद या पुल	(कहानी)	सुनीति	100–105
21.	सुनता के डोर	(कहानी)	लेखक मंडल	106–110
22.	महापुरुषों का बचपन	(प्रेरक–प्रसंग)	लेखकमंडल	111–115
23.	गुरू और चेला	(कविता)	सोहन लाल द्विवेदी	116–123
24.	बाबा अंबेडकर	(जीवन–चरित)	संकलित	124–130
	परिशिष्ट			131–137
	संस्कृत			138–148

589CIP

सीखने के प्रतिफल

सीखने–सिखाने की प्रक्रिया

सभी शिक्षार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम बच्चों सहित) को व्यक्तिगत, सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाए ताकि उन्हें :–

- विभिन्न विषयों, स्थितियों, घटनाओं, अनुभवों, कहानियों, कविताओं आदि को अपने तरीके और अपनी भाषा में (मौखिक/लिखित/सांकेतिक रूप से) कहने–सुनाने/प्रश्न पूछने, टिप्पणी करने, अपनी राय देने की आज़ादी हो।
- पुस्कालय/कक्षा में अलग–अलग तरह की कहानियाँ, कविताएँ अथवा/बाल साहित्य, स्तरानुसार सामग्री, साइनबोर्ड, होर्डिंग्स, अखबारों की कतरने उनके आस–पास के परिवेश में उपलब्ध हों और उन पर चर्चा करने के मौके हों।
- तरह–तरह की कहानी, कविताओं, पोस्टर आदि को संदर्भ के अनुसार पढ़कर समझने–समझाने के अवसर उपलब्ध हों।
- सुनी, देखी, पढ़ी बातों को अपने तरीके से, अपनी भाषा में लिखने के अवसर हों।
- ज़रूरत और संदर्भ के अनुसार अपनी भाषा गढ़ने (नए शब्द/वाक्य/अभिव्यक्तियाँ बनाने) और उनका इस्तेमाल करने के अवसर हों।
- एक–दूसरे की लिखी हुई रचनाओं को सुनने, पढ़ने और उस पर अपनी राय देने, उसमें अपनी बात को जोड़ने, बढ़ाने और अलग–अलग ढंग से लिखने के अवसर हों।
- आस–पास होने वाली गतिविधियों/घटने वाली घटनाओं को लेकर प्रश्न करने, बच्चों से बातचीत या चर्चा करने, टिप्पणी करने, राय देने के अवसर उपलब्ध हों।
- विषय–वस्तु के संदर्भ में भाषा की बारीकियों और उसकी नियमबद्ध प्रकृति को समझने और

सीखने की संप्राप्ति **(Learning Outcomes)**

बच्चे –

LH501. सुनी अथवा पढ़ी रचनाओं (हास्य, साहसिक, सामाजिक आदि विषयों पर आधारित कहानी, कविता आदि की विषय–वस्तु, घटनाओं चित्रों और पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं/प्रश्न पूछते हैं/अपनी स्वतंत्र टिप्पणी देते हैं/अपनी बात के लिए तर्क देते हैं/निष्कर्ष निकालते हैं।

LH502. अपने आस–पास घटने वाली विभिन्न घटनाओं की बारीकियों पर ध्यान देते हुए उन पर मौखिक रूप से अपने प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं/प्रश्न पूछते हैं।

LH503. भाषा की बारीकियों पर ध्यान देते हुए अपनी (मौखिक) भाषा गढ़ते हैं।

LH504. विभिन्न प्रकार की सामग्री (अखबार, बाल साहित्य, पोस्टर आदि) में आए संवेदनशील बिन्दुओं पर (मौखिक/लिखित) अभिव्यक्त करते हैं, जैसे –'ईदगाह' कहानी पढ़ने के बाद बच्चा कहता है – मैं भी अपनी दादी की खाना बनाने में मदद करता हूँ।

LH505. विभिन्न स्थितियों में उद्देश्यों (बुलेटिन पर लगाई जाने वाली सूचना, कार्यक्रम की रिपोर्ट, जानकारी आदि प्राप्त करने के लिए) के लिए पढ़ते और लिखते हैं।

LH506. अपनी पाठ्यपुस्तक से इतर सामग्री (अखबार, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि)को समझते हुए पढ़ते और उसके बारे में बताते हैं।

LH507. सुनी अथवा पढ़ी रचनाओं (हास्य, साहसिक, सामाजिक आदि विषयों पर आधारित कहानी, कविता आदि की विषय–वस्तु, घटनाओं, चित्रों और पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं/प्रश्न पूछते हैं/अपनी स्वतंत्र टिप्पणी देते हैं/अपनी बात के लिए तर्क देते हैं/निष्कर्ष निकालते हैं।

उनका प्रयोग करने के अवसर हों। • नए शब्दों को चित्र शब्दकोश/शब्दकोश में देखने के अवसर उपलब्ध हों। • अन्य विषयों, व्यवसायों, कलाओं आदि (जैसे–गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, नृत्यकला, चिकित्सा आदि) में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली को समझने और उसका संदर्भ एवं स्थिति के अनुसार इस्तेमाल करने के अवसर हों। • पाठ्यपुस्तक और उससे इतर सामग्री में आए प्राकृतिक, सामाजिक एवं अन्य संदवेदनशील मुद्दों को समझने और उन पर चर्चा करने के अवसर उपलब्ध हों।	**LH508.** अपरिचित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजते हैं। **LH509.** स्वेच्छा से या शिक्षक द्वारा तय गतिविधि के अंतर्गत लेखन की प्रक्रिया की बेहतर समझ के साथ अपने लेखन को जांचते हैं और लेखन के उद्देश्य और पाठक के अनुसार लेखन में बदलाव करते हैं। जैसे– किसी घटना की जानकारी के बारे में बताने के लिए स्कूल की भित्ति पत्रिता के लिए लिखना और किसी दोस्त को पत्र लिखना। **LH510.** भाषा की बारीकियों पर ध्यान देते हुए अपनी भाषा गढ़ते हैं और उसे अपने लेखन/ब्रेल में शामिल करते हैं। **LH511.** भाषा की व्याकरणिक इकाइयों, जैसे– कारक–चिह्न, क्रिया, काल, विलोम आदि की पहचान करते हैं और उनके प्रति सचेत रहते हुए लिखते हैं। **LH512.** विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते हुए अपने लेखन में विराम चिह्नों, जैसे– पूर्ण विराम, अल्प विराम,प्रश्नवाचक चिह्न, उद्धरण चिह्न का सचेत इस्तेमाल करते हैं। **LH513.** स्तरानुसार अन्य विषयों, व्यवसायों, कलाओं आदि (जैसे – गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, नृत्यकला, चिकित्सा आदि) में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली को समझते हैं और संदर्भ एवं स्थिति के अनुसार उनका लेखन में इस्तेमाल करते हैं। **LH514.** अपने आस–पास घटने वाली विभिन्न घटनाओं की बारीकियों पर ध्यान देते हुए उन पर लिखित रूप से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। **LH515.** उद्देश्य और संदर्भ के अनुसार शब्दों, वाक्यों, विराम चिह्नों का उचित प्रयोग करते हुए लिखते हैं। **LH516.** पाठ्यपुस्तक और उससे इतर सामग्री में आए संवेदनशील बिन्दुओं पर लिखित/ब्रेल लिपि में अभिव्यक्ति करते हैं। **LH517.** अपनी कल्पना से कहानी, कविता, पत्र आदि लिखते हैं। कविता, कहानी को आगे बढ़ाते हुए लिखते हैं।

विषय–सूची (Contents)

क्र.	पाठ का नाम	सीखने के प्रतिफल
1.	मैं अमर शहीदों का चारण	LH501, LH502, LH506, LH507, LH508, LH509, LH512, LH516, LH511
2.	घी, गुड़ और शहद देनेवाला वृक्ष	LH501, LH503, LH505, LH506, LH508, LH509, LH510, LH507, LH511, LH515, LH517, LH506, LH516
3.	सोन के फर	LH501, LH502, LH503, LH504, LH507, LH508, LH509, LH511, LH512, LH515, LH516
4.	मैं सड़क हूँ	LH501, LH502, LH503, LH504, LH508, LH507, LH509, LH510, LH511, LH512, LH517, LH516
5.	रोबोट	LH501, LH504, LH507, LH508, LH509, LH510, LH511, LH512, LH517
6.	चित्रकार मोर	LH501, LH502, LH503, LH506, LH507, LH508, LH509, LH510, LH511, LH517
7.	क्यूँ–क्यूँ छोरी	LH501, LH502, LH503, LH504, LH507, LH508, LH509, LH510, LH511, LH512, LH516
8.	स्वामी आत्मानंद	LH501, LH502, LH503, LH507, LH511, LH512
9.	श्रम के आरती	LH501, LH502, LH503, LH506, LH507, LH508, LH510, LH511
10.	सुनिता की पहिया कुर्सी	LH501, LH502, LH504, LH507, LH508, LH509, LH510, LH513, LH515, LH516
11.	महामानव (कहानी)	LH501, LH502, LH504, LH507, LH508, LH509, LH510, LH513, LH515, LH516
12.	गुंडाधूर (जीवन–चरित)	LH501, LH503, LH507, LH508, LH509, LH510, LH511, LH512, LH517
13.	जंगल के राम कहानी	LH508, LH509, LH510, LH511, LH515, LH507, LH501, LH502
14.	रेशम, चंदन और सोने की धरती–कर्नाटक	LH501, LH503, LH507, LH505, LH508, LH509, LH511, LH512, LH515, LH516, LH517
15.	एक और गुरु दक्षिणा	LH507, LH508, LH509, LH511, LH515, LH501, LH502, LH503
16.	पत्र	LH501, LH505, LH506, LH507, LH508, LH509, LH510, LH511, LH513, LH514, LH515, LH517
17.	जीवन के दोहा	LH501, LH507, LH509, LH511, LH515, LH503, LH508, LH510, LH517
18.	हार नहीं होती	LH508, LH509, LH501, LH503, LH506, LH507, LH508, LH509, LH510, LH511, LH514, LH515, LH516
19.	राष्ट्र–प्रहरी	LH501, LH502, LH503, LH505, LH507, LH508, LH509, LH510, LH511, LH513, LH515
20.	मस्जिद या पुल	LH501, LH502, LH504, LH507, LH508, LH509, LH510, LH511, LH515, LH516, LH503
21.	सुनता के डोर	LH507, LH508, LH509, LH510, LH515, LH501, LH502, LH503
22.	महापुरुषों का बचपन	LH501, LH503, LH507, LH508, LH509, LH510, LH512, LH515, LH516
23.	गुरू और चेला	LH501, LH503, LH507, LH508, LH509, LH510, LH511, LH512, LH516
24.	बाबा अंबेडकर	LH501, LH502, LH504, LH506, LH507, LH508, LH509, LH510, LH511, LH516
25.	चमत्कार	LH501, LH502, LH503, LH504, LH506, LH507, LH508, LH509, LH510, LH511, LH516

उदाहराणार्थ रूब्रिक्स

Chapter अध्याय	Sub-Topics उप-विषय	Level -1 स्तर-1	Level -2 स्तर-2	Level -3 स्तर-3	Level -4 स्तर-4
After the lesson, students will be able to: पाठ के बाद, विद्यार्थी कर सकेंगे:		**Remember, Recall, List, Locate, Label, Recite** याद करना, स्मरण करना, सूचीबद्ध करना, खोजना लेबल करना, वर्णन करना	**Understand, explain, Illustrate, summaries, match** समझना, व्याख्या करना, संक्षेप में लिखना, उदाहरण देना, मेल करना	**apply, organize, use, solve, prove, draw** प्रयोग करना, व्यवस्थित करना, उपयोग करना, हल करना, साबित करना, चित्रण करना	**evaluate, hypothesis, analyses, compare, create, categories** मूल्यांकन करना, परिकल्पना करना, विश्लेषण करना, तुलना करना, सृजन करना, वर्गीकरण करना
1	2	3	4	5	6
मैं अमर शहीदों का चारण	• कठिन शब्दों का अर्थ • अनुकरण वाचन कविता को भाव भाव से बोलना भावपूर्ण सस्वर वाचन भावार्थ कथन समूह में चर्चा कक्षा में प्रश्न उत्तर कर लेगा बच्चों से उनके विचार लेना भाषा तत्व की चर्चा/अभ्यास व्याकरण पर अभ्यास – समान उच्चारित शब्द • विलोम शब्द • सार्थक शब्द	• कवि का नाम • कविता • इसी भावपूरित अन्य कवितायें • इसी कवि की अन्य कविता खोजेगा • क्रांतिकारियों व देशभक्तों को पहचान करके नाम जानेगा • सैनिकों के बारे में पता करके लिख सकेगा। • भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की जानकारी इक्ठ्ठा कर सकेगा।	• कठिन शब्दों के अर्थ समझेगा • कविता की पंक्तियों का भावार्थ समझेगा / लिखेगा / बता सकेगा। • स्वतंत्रता के लिए किए गए संघर्षों को जानेगा। उदाहरण सहित बता पायेगा। • विलोम शब्दों की समझ बनेगी। • शब्दकोश के क्रम से लिख सकेगा।	• सैनिकों के जीवन की परेशानी जानेगा। • महापुरूषों की कहानियाँ/किस्से उनके आदर्श सूत्र वाक्यों का संकलन करेगा। महापुरूषों के चित्र बना सकेगा।	• स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए किये त्याग/बलिदानों को जान पायेगा। महाकवि श्रीकृष्ण सरल की अन्य कविताएं ढूंढेगा। • साहित्य में रूचि बढ़ेगी।